

तत्त्वमासुध्या यो भन्या प्रदेसिवस्था का दन्ः जल तत्त्व मासुध्या यो भन्या प्रदेसी का दो  
मा आ यो भनि जा नुः तेज तत्त्व मासुध्या याः चारु भया का द्भनि जा नु वायु त  
त्व मासुध्या याः प्रदेसि रो गि भया को द्भनि जा नु आकास तत्त्व मासुध्या याः  
प्रदेसि मृत्यु क भया को द्भनि जा नु हे पारवति ऐ सत्वर द्ये मा को सान्न मे  
वे शान के हि दे न अरु सा सै ख के हि दे न मिषा चार मा न दन् ई दान  
दि सु र व ल्यो भन्या पि गल न य लो त्त पद्मि म ना वस्त मृत्यु क द्भ प स त्रि  
नि सं ग मा र द्या अ ने ग ना स द्भ व स वम्ब न नि ह व स इति वन्धु यो ग की स्वर द्भ



साधेः रक्ताः॥ पुरकाः॥ कुम्भका॥ चारका॥ भुशंगमये॥ अचि कहि गयो॥ व  
दुद्वार देवानां वाम अंग पित्रैः॥ दाद स मक्षेर कहि गयो॥ अथ मंत्र दाद  
स अर पिंड गदे दन॥ दंतित्वर देवे सा त्व कहु न्द॥ माहा द व मन्द दन  
रुक्क लो ह वै च मन्द दन पाप॥ पुरक देह शत्रु घ गहो॥ कुम्भ कर  
सः तं म्भ कन करै॥ जित रक्षा गदे दन॥ ओम हां दे जि आ रोग द मयाः॥  
पुषः॥ नाषः॥ नेत्रः॥ कस्तो॥ निरोगिः दन॥ ये सा सा त्व जन्म नु वे पि द्वा य  
लाः॥ ओ क ना का ल जा नि कन॥ य नु सुर्ये समान जि वै॥ दे पार व ति